12 NOON

PROCLAMATION UNDER ARTICLE 356 OF HE CONSTITUTION

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI S. D. PATIL): Sir, I beg to lay on the Table, under clause (3) of article 356 of the Constitution, a copy (in English and Hindi) of the Proclamation [G.S.R. No. 719(E)] issued by the President, under clause (2) of the said article on November 25, 1977, revoking the Proclamation made on March 22, 1975, in relation to the State of Nagaland. [Placed in Library. *See* No. LT-1177/77].

FOURTEENTH REPORT OF THE PUBLIC ACCOUNTS COMMITTEE (1917-78)

SHRIMATI SUSHILA SHANKAR ADIVAREKAR (Maharashtra): Sir, I beg to lay on the Table a copy of the Fourteenth Report of the Public Accounts Committee on paragraphs 13, 15, 16, 17, 18 and 20 relating to Telephone Exchanges included in the Report of the Comptroller and Auditor General of India for the year 1974-75, Union Government (Posts and Telegraphs) relating to Ministry of Communications.

STATEMENT BY MINISTER

Visit to the Socialist Federal Republic of Yugoslavia

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE): Sir, I beg to lay on the Table a statement (in English and Hindi) on my visit to the Socialist Federal Republic of Yugoslavia from November 7 to 9, 1977. [Placed in Library. *See* No. LT-1172/77].

REFERENCE TO ALLEGED REFUSAL OF PERMISSION TO SHRI ZUBIN MEHTA TO VISIT INDIA

श्री श्रीकान्त वर्मा (मध्य प्रदेश) : सभापति महोदय, जुबिन मेहता संसार-प्रसिद्ध संगीतकार हैं, लॉस एन्जेल्स के फिलहारमोनिक आर्केस्ट्रा के कंडक्टर हैं । वे अपने आर्केस्ट्रा के साथ हिन्दुस्तान आना चाहते थे । लेकिन यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि विदेश मंत्रालय ने उन्हें भारत आने की अनुमति नहीं दी, और इसका कारण शायद उनके मन में यह ख़याल है कि जुबिन मेहता का आर्केस्ट्रा इज़रायलियों का है । अध्यक्ष महोदय, यह सचमुच ही बड़े दुर्भाग्य की बात है कि कलाकारों और संगीतकारों को परखते समय उनकी राजनैतिक विचारधारा ो ध्यान में रखा जाता है । कुछ साल पह फ्रांस के प्रसिद्ध उपन्यासकार और दार्शनिक और मार्क्सवादी ज्यों पाल सात्र ने इजरायल का समर्थन किया था लेकिन सोवियत यूनियन ने उनकी निन्दा नहीं की और सोवियत यूनियन आने की अनुमति दी क्योंकि सोवियत यूनियन में ज्यां पाल सात्र को एक कलाकार के रूप में देखा गया । हमारा विदेश मंत्रालय और हमारी सरकार इतनी संकुचित हो गई है कि जुबिन मेहता जैसे कलाकार को भी राजनैतिक दृष्टि से परख रही है । सब से अजीब बात यह है कि जुबिन मेहता हिन्दुतान में पैदा हुए थे । यहीं उनकी शिक्षा हुई और यहां से अमरीका जाकर उन्होंने अपने लिये और हिन्दुस्तान के लिये बड़ी ख्याति अर्जित की । मैंने लांसऐंजिल्स में स्वयं ही उनके आरकेस्ट्रा को सुना है और लोगों से बात की है । वहां उनकी इज्जत देवता के समान है और सारे संसार के संगीत-प्रेमी उनकी बड़ी इज्जत करते हैं । ऐसे समय में जब कि खुद प्रेसीडेंट सादात इज़रायल जा सकते हैं और शीत युद्ध को शिथिल करने का प्रयत्न कर सकते हैं, हमारा विदेश मंत्रालय इतना संकुचित दृष्टिकोण क्यों अपना रहा है । मेरे विचार में ऐसा करना शीत युद्ध को एक तरह से बढ़ाना है, घटाना नहीं है । किसी भी अरब देश ने